C. Kesavan

C. Kesavan was born at Mayyanad in Quilon. He graduated from University College, Trivandrum and took his law degree from Law College, Trivandrum. He was a prominent freedom fighter who organised, guided and led the struggle for the independence of India and was the chief architect of the liberation of Travancore State from the clutches of monarchy.

After obtaining BA and BL degrees, he started legal practice at Kollam. He imbibed the teachings of Sree Narayana Guru, the great sage and social revolutionary and was gradually attracted to the dynamic philosophy of Gandhiji. As a man of the masses, he admired the radical economic and political teachings of Karl Marx also. Serving as the general secretary of the social organisation Sree Narayana Dharma Paripalana Yogam, he gave a new momentum to the social and political struggles in the state.

C. Kesavan briefly worked as a school teacher. His political career began in 1932 as the undisputed leader of Abstention Movement (Nivarthana Agitation). As a leader of this Movement, which later shaped the struggle for Independence in this part of the country, he entered mainstream politics through the State Congress. He invited the severe wrath of the rulers while serving as the general secretary of All Travancore Joint Political Congress. He was arrested at Alleppey on June 6, 1935, tried for sedition, sentenced to imprisonment and fined and confined to Central Prison, Thiruvananthapuram. He made an epoch-making speech in Kozhenchery in 1935 which was a turning point in his career and a milestone in shaping the destiny of modern Kerala. C. Kesavan was arrested and imprisoned in Central Jail, Poojappura, Trivandrum. Later released, he was given a rousing reception at Kidangaparambu, Alappuzha. With the establishment of Travancore State Congress in 1938, the stormy political life of C. Kesavan had begun. Later, he courted arrest frequently and became a regular visitor to Poojappura Central Prison in Trivandrum. He had to again undergo imprisonment from August 29, 1942 for one year for taking part in the Quit India Movement.

In the first election held after Independence he was elected to the Travancore Legislative Assembly and became a Minister in the Pattom Thanu Pillai Ministry in 1948 and held the portfolio of Health & Forest. By opening the Medical College in Trivandrum and legislating the bill for minimum wages of labourers, C. Kesavan displayed a model to Kerala society. However, he resigned after a few months. Subsequently, he was again elected to the Assembly and became the Chief Minister of Travancore State on February 28, 1951. Afterwards, even though he was elected to the Assembly once again in 1952, he retired from active public life after a few years and spent the last phase of his life at his home town Mayyanad in Quilon till his death on July 7, 1969.

C. Kesavan was also a pioneering journalist; he launched one of the first daily newspapers in Malayalam: Kaumudi. He was a singer, actor and writer who penned one of the classic autobiographies in literary history: Jeevitha Samaram (Life Struggles).

A Kerala icon, former Chief Minister of erstwhile Travancore-Cochin, leader of freedom movement, founding father of Travancore State Congress, architect of modern Kerala, hero of Abstention Movement; C. Kesavan was an outstanding social reformer of avowed commitment who revolutionized the society of Kerala with his trademark honesty, humility and inexorable determination. Known for fierce independence of thought, outlook and action, C. Kesavan's brilliant and coercive oratory moved millions in their pursuit for political independence and social regeneration.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on C. Kesavan.

Credits :

Text : Based on the information received from proponent

Stamp/ FDC/ Brochure : Smt. Alka Sharma

Cancellation Cachet

भारतीय डाक विभाग

Department of Posts
India

सी. केशवन

C. KESAVAN
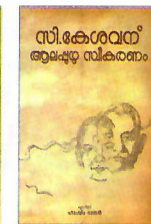
विवरणिका BROCHURE

सी. केशवन

सी. केशवन का जन्म कोल्लम के मय्यनाड में हुआ था। उन्होंने त्रिवेन्द्रम के यूनिवर्सिटी कॉलेज से स्नातक उपाधि और त्रिवेन्द्रम के लॉ कॉलेज से कानून में स्नातक उपाधि पाई। स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख सैनिक, सी. केशवन ने भारत को स्वाधीन करने के संघर्ष को संगठित किया, मार्गदर्शन एवं नेतृत्व दिया और त्रावणकोर को राजतंत्र के चंगुल से मुक्त करने के शिल्पकार तथा प्रेरक बने।

बी.ए. एवं बी.एल. की उपाधियाँ पाने के बाद उन्होंने कोल्लम में वकालत शुरू की। उन्होंने महान ऋषि और सामाजिक क्रान्तिकारी, श्री नारायण गुरू के उपदेशों को आत्मसात् किया और धीरे-धीरे गांधीजी के सजीव जीवन दर्शन से आकृष्ट हुए। जनता के बीच में रहने के कारण उन्होंने कार्ल मार्क्स के मौलिक, आर्थिक एवं राजनीतिक सिद्धान्तों की भी प्रशंसा की। श्री नारायण धर्म परिपालन योगम् नामक सामाजिक संगठन के महासचिव के रूप में सेवारत रहते हुए उन्होंने राज्य के सामाजिक एवं राजनीतिक संघर्षों को नया संवेग दिया।

सी. केशवन ने कुछ समय स्कूल अध्यापक के रूप में भी कार्य किया। निवर्त्तन आन्दोलन के अविवादित नेता के रूप में उन्होंने 1932 में अपने राजनीतिक जीवन का आरंभ किया। उन्होंने निवर्त्तन आन्दोलन, जिसने बाद में देश के इस भाग में स्वाधीनता संघर्ष को रूप दिया था, के नेता के रूप में राज्य कांग्रेस के जरिए मुख्य राजनीतिक धारा में प्रवेश किया। अखिल त्रावणकोर संयुक्त राजनीतिक कांग्रेस के महासचिव के रूप में सेवा करते हुए उन्हें तत्कालीन शासकों के क्रोध का सामना भी करना पड़ा। 6 जून 1935 को वे एलेप्पी में गिरफ्तार किये गये और तिरुवनन्तपुरम के सेन्ट्रल जेल में डाले गये। उन्होंने 1935 में कोषृचेरी में एक युगान्तकारी भाषण दिया जिससे उनके जीवन में एक नया मोड़ आया और आधुनिक केरल को गढ़ने में वह भाषण मील का पत्थर बना। सी. केशवन गिरफ्तार किए गए और त्रिवेन्द्रम, पूजप्पुरा के सेन्ट्रल जेल में डाले गये। बाद में जब वे रिहा हो गए तब किडंगापरम्पु और एलेप्पी में उनका शानदार स्वागत हुआ। 1938 में त्रावणकोर राज्य कांग्रेस की स्थापना के साथ ही सी. केशवन के, उथल पुथल के दौर वाले राजनीतिक जीवन का आरंभ हुआ। बाद में वे बारम्बार गिरफ्तार किए गए और त्रिवेन्द्रम के पूजप्पुरा सेन्ट्रल जेल भेजे गए। तदनन्तर भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने के कारण उन्हें 29 अगस्त 1942 से एक साल का कारावास भी भोगना पड़ा।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के प्रथम चुनाव में वे त्रावणकोर विधानसभा में चुने गये और 1948 में पट्टम थाणु पिल्लै के मंत्रालय में स्वास्थ्य एवं वन मंत्री बनें। तिरुवनन्तपुरम में मेडिकल कॉलेज का प्रारंभ करके और मज़दूरों को न्यूनतम मजदूरी मिलना सुनिश्चित करने के लिए बिल द्वारा कानून बनाकर सी. केशवन ने केरल के समाज के आगे एक आदर्श उपस्थित किया। परन्तु कुछ महीनों बाद उन्होंने त्यागपत्र दे दिया। बाद में वे फिर विधानसभा के लिए चुने गये और 28 फरवरी 1951 को त्रावणकोर राज्य के मुख्यमंत्री बने। उसके पश्चात हालांकि वे विधानसभा के लिए 1952 को फिर चुने गये तो भी कुछ साल बाद सक्रिय सार्वजनिक जीवन से निवृत्त हुए और उन्होंने अपने जीवन का अन्तिम चरण कोल्लम के अपने स्वदेश नगर मय्यनाड में 7 जुलाई 1969 में मृत्युपर्यन्त बिताया।

मलयालम के प्रथम समाचार पत्रों में से एक 'कौमुदी' को प्रारंभ करने वाले सी. केशवन एक अग्रगामी पत्रकार थे। वे एक गायक, अभिनेता और लेखक थे जिन्होंने साहित्य के इतिहास की श्रेष्ठ आत्मकथाओं में से एक 'जीवित समरम्' (जीवन के संघर्ष) की रचना की।

भूतपूर्व त्रावणकोर कोचीन राज्य के मुख्य मंत्री, स्वतंत्रता आन्दोलन के नेता, त्रावणकोर राज्य कांग्रेस के संस्थापक, आधुनिक केरल के शिल्पकार और निवर्त्तन आन्दोलन के नायक के रूप में केरल के जनसामान्य के हृदय में सी. केशवन को विशेष स्थान प्राप्त हैं। वे स्वीकृत प्रतिबद्धता युक्त विशिष्ट सामाजिक सुधारक थे जिन्होंने अपने विशिष्ट गुण ईमानदारी, विनय और कठोर संकल्प से केरल के समाज में आमूल परिवर्तन किया।

डाक विभाग, सी. केशवन पर एक स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना पर आधारित

डाकटिकट/प्रथम दिवस आवरण : श्रीमती अलका शर्मा

विवरणिका/विरूपण

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक-टिकटें	:	600000
Stamps Printed	:	600000
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	भारतीय प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य: ₹ 5.00